# आनंद एक : रूप अनेक

–डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

# आनंद एक : रूप अनेक

लेखिका

**विद्वत्‌रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया**

बी.ए.ऑनर्स, एम.ए., पी.एच.डी. (स्वर्णपदक प्राप्त)

मो. 09321295265 / Email: dpptmumbai@gmail.com

मुंबई (महाराष्ट्र)

*प्रकाशक :*

**पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

**ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015**

फोन : (0141) 2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

**आनंद एक : रूप अनेक** : विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

● **प्रथम संस्करण** : 2 हजार
(14 अप्रैल, 2022)
महावीर जयन्ती

● **E-book प्रथम संस्करण**
(14 अप्रैल, 2022)

मूल्य : **सात रुपये**

टाइपसैटिंग :
**त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स,**
ए-4, बापूनगर, जयपुर

मुद्रक :
**देशना कम्प्यूटर**
60 पूनम विहार
जगतपुरा, जयपुर

## विषय-सूची

1. आनंद ! आनंद !! आनंद !!! 1
2. आनंद एक : प्रश्न अनेक 2
3. अंतर्द्वंद्व मन का 3
4. क्या बचपन में है आनंद? 4
5. क्या शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति है आनंद? 5
6. क्या मन की संतुष्टि है आनंद? 6
7. क्या मधुर वचन है आनंद? 7
8. क्या दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति है आनंद? 8
9. क्या खुशी के साथ अनिवार्य है दु:ख? 9
10. क्या मृग मरीचिका है आनंद? 10
11. क्या अभी तक हम आनंद के भ्रम में जी रहे थे? 11
12. क्या है मेरी भूल? 12
13. कहाँ है आनंद? 13
14. आनंद! अनिन्द्रिय आनंद ! अनंत आनंद!! 14
15. अंतर आनंद की क्वालिटी का 15
16. अंतर आनंद की क्वांटिटी का 16
17. अंतर सांसारिक आनंद और पारमार्थिक आनंद में 17
18. आनंद की खोज 19
19. इंद्रिय आनंद 20
20. अनिन्द्रिय आनंद 22
21. स्व-पर भेदविज्ञान 23
22. भेदविज्ञान की प्रक्रिया 24
23. भेदविज्ञान के स्तर 25
24. रत्नत्रय की पूर्णता 26
25. अतीन्द्रिय आनंद 27

# प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक 'आनंद एक : रूप अनेक' की लेखिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया बचपन से ही प्रतिभाशाली रही हैं। विद्वत्ता की दृष्टि से वे पिताश्री डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के पदचिन्हों पर ही चल रही हैं। उनके द्वारा अभी तक छोटी-बड़ी 53 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिनकी सूची आगे प्रकाशित की गई है।

साथ-ही-साथ आपने जैन सिद्धान्तों पर आधारित अनेक 'गेम्स' भी बनाए हैं, जिनके खेलने के नियम भी जैन सिद्धान्तों का ज्ञान कराते हैं। इन 'गेम्स' की विशेषता यह है कि इनको खेलने से बच्चों को सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ अहिंसात्मक आचरण की प्रवृत्ति भी सहज विकसित हो जाती है। इनमें जीत हिंसात्मक कार्य मार-पीट से नहीं, ज्ञान-ध्यान से हासिल की जाती है। बच्चों को ज्ञान-ध्यान करने की प्रेरणा मिलती है।

आपने 'आचार्य कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार एक समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। आपने अपने शोध ग्रन्थ में शोध समीकरणों (rules and regulations) को ध्यान में रखते हुए आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों और टीकाकारों का सर्वांगीण (सम्पूर्ण) विवेचन सरल-सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया है, जो कि विद्वत्जन और बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ जनसामान्य को भी अपनी ओर आकृष्ट (attract) करता है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकें भी अद्यावधि (अब तक) जैन समाज में प्रचलित अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्वज्ञान के समावेश के कारण अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं।

आपकी सभी कृतियाँ अध्यात्मरस से सराबोर और भेदज्ञान से ओतप्रोत हैं। आप विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैली में अध्यात्म को सरल भाषा में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रही हैं।

'आनंद' की चाहत सभी को होती है। अपनी बुद्धि के अनुसार उसे पाने का प्रयास सभी करते हैं, पर वास्तविक आनंद क्या है? उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है? आदि अनेक सवालों के जवाब हमें इस पुस्तक में मिलेंगे। सभी आनंद के सही स्वरूप को पहचानकर उसकी प्राप्ति करें - इसी भावना से प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। शीघ्र प्रकाशन व्यवस्था के लिए डॉ. अखिल बंसलजी का बहुत आभार है।

**-परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
कार्यकारी महामंत्री

# अपनी बात

प्रस्तुत पुस्तक 'आनंद एक: रूप अनेक' श्रीमती दीप्ती पाटिल के निरंतर प्रेरणा एवं प्रयास के कारण लिखी गई है। मेरे द्वारा 'आनंद' सीरीज का एक मैसेज भूल से परमागम ऑनर्स ग्रुप (व्हाट्सअप) में चला गया। जिसका एहसास मुझे तुरंत ही हो गया और मैंने उसे डिलीट कर दिया। पर उस अल्प अंतराल में भी वह मैसेज दीप्ती की निगाह में आ गया। वह उसके मन को इतना भाया की उसने मुझे 'परमागम ऑनर्स' के सोशल मीडिया के लिए 'आनंद' विषय पर लिखने का आग्रह किया। उसका आग्रह स्वीकार करते हुए मैंने लिखना आरंभ किया। मैं लिखती जाती और वह आधुनिक संसाधन फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर पर डालती जाती।

पाठकों के विशेष आग्रह और दीप्ती के प्रयासों के स्वरूप यह पुस्तक आपके हाथों में है।

**–डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया**

सभी को सदर जय जिनेन्द्र,

'आनंद एक: रूप अनेक' विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया जी मैडम के अनेक अद्‌भुत रचनाओं में से एक है। इस पुस्तक के निर्माण की कहानी बड़ी रोचक है। मैडम ने जब 'आनंद' के विषय पर लिखना आरंभ किया तो हम उसे 'परमागम ऑनर्स' के सोशल मीडिया पर Thought series के रूप में डालने वाले थे; लेकिन क्रमबद्ध में जो चीज जैसी घटनी होती है, वैसे ही घटती है। वही Thought series एक रोचक और भेद विज्ञान से सराबोर पुस्तक के रूप में आज आपके हाथों में है। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझती हूँ कि मैं डॉ. टड़ैयाजी मैडम के सानिध्य में आ गयी। बचपन से ही उनके साहित्य ने मेरे जीवन में जैन सिद्धान्तों की दृढ़ नींव रखी और अब उनके सान्निध्य और शिक्षा ने मेरे सोच और जीवन को नयी संजीवनी दी है और मेरे जीव में अनेक अमूल्य परिवर्तन आये हैं। मैं उनकी आजन्म ऋणी रहूँगी। मुझे विश्वास है कि 'आनंद एक : रूप अनेक' पुस्तक पाठकों को विचार करने पर जरूर मजबूर करेगा कि जो हम दिन रात विषयों, विकारों के पूर्ति के लिए भाग–दौड़ करते है और उनके पूर्ति में आंनद मानते हैं – क्या वो सही मैं आनंद है?

यह पुस्तक हमारी सोच को सही दिशा प्रदान करता है। जिससे हमारा इसी जन्म का ही नहीं, अनेक भवों का कल्याण होगा। पुनः एक बार मैं डॉ. टड़ैयाजी मैडम का इस पुस्तक के रचना करने के लिए आभार व्यक्त करती हूँ।

**– दीप्ती सालियन–पाटिल** (परमागम ऑनर्स स्टूडेंट)

# आनंद एक : रूप अनेक

## 1. आनंद ! आनंद !! आनंद !!!

वाह ! वाह !! क्या शब्द है 'आनंद' !!!

सुनते ही मिश्री सी घुल जाती है कानों में! खुशी छा जाती है चेहरों पर। आँखें चमकने लगती हैं, दिल धड़कने लगता है।

हमारे अनेकों सवालों का जवाब है- आनंद!

जब कोई पूँछता है - 'आप कैसे हैं?'

हमारा जवाब होता है - 'आनंद से।'

वह फिर पूँछता है - 'घर में सब कैसे हैं?'

पुन: हमारा जवाब होता है- 'आनंद से!'

हाँ ! भाई साहब, खुशी से कहो या कुशल मंगल से या आनंद से- सभी पर्यायवाची ही हैं।

हम सभी आनंद से रहना चाहते हैं, बड़ों से सुखी जीवन का आशीर्वाद चाहते हैं, छोटों को खुश रहने का आशीर्वाद देते हैं अर्थात् हम सभी अपना जीवन आनंद से बिताना चाहते हैं।

## 2. आनंद एक : प्रश्न अनेक

आनंद में जीना चाहते हैं सभी प्राणी, आनंद में रहना चाहते हैं सभी जन। आनंद के पीछे भागते हैं सारा जीवन। पल-पल, क्षण-क्षण समेटते हैं - आनंद के पलों को। बांध कर रखना चाहते हैं मुट्ठी में उन लम्हों को। पर फिसल-फिसल जाते हैं वे पल, वे क्षण, वे लम्हे।

आनंद के पल इतने छोटे क्यों होते हैं? आज जिनमें आनंद महसूस हो रहा है, कल वे तकलीफ क्यों देने लगते हैं ? कहीं आनंद के स्वरूप को समझने में ही तो मुझसे भूल नहीं हो रही है?- ऐसे अनेकों प्रश्न उठ रहे हैं मन में, चल रहा है अंतर्द्वंद्व मन में।

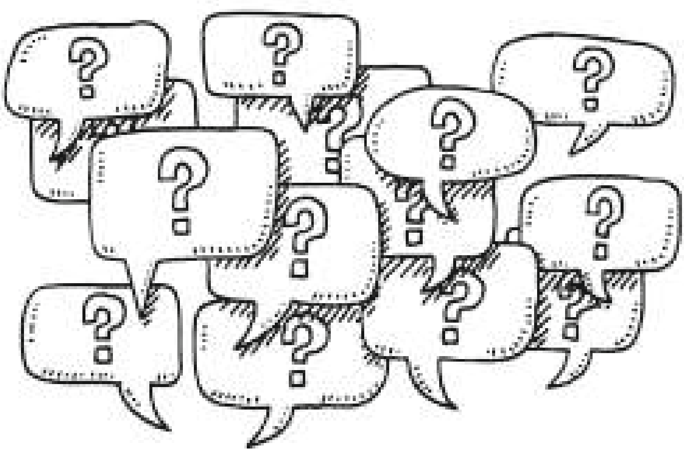

## 3. अंतर्द्वंद्व मन का

आनंद के जिन पलों के सहारे हम अब तक अपना जीवन आनंद से व्यतीत कर रहे थे , जब वे छोटे- छोटे पल भी हमारे हाथों से फिसलने लगते हैं ; हमारे जीवन से निकलने लगते हैं, तब अनेकों प्रश्न हमारे मन- मस्तिष्क में गूँजने लगते हैं:-

1. क्या बचपन में है आनंद?
2. क्या शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति ही है आनंद ?
3. क्या मन की संतुष्टि में है आनंद??
4. क्या मधुर वचनों में है आनंद?
5. क्या दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में है आनंद?
6. क्या खुशी के साथ दुःख अनिवार्य है ?
7. क्या मृग मरीचिका है आनंद?
8. क्या अभी तक हम आनंद के भ्रम में जी रहे थे?
9. क्या है मेरी भूल?
10. कहाँ है आनंद?; कैसा है आनंद?

## 4. क्या बचपन में है आनंद?

बचपन का आनंद! वाह!! क्या कहने हैं बचपन के आनंद के? दिन–रात तो देखते हैं उनके सुख!

जब तक वे बोलना नहीं सीखते, तब तक तो उनकी अभिव्यक्ति सीमित, दुःख असीमित अर्थात् कष्ट तो होता है उन्हें बहुत, पर बता नहीं सकते। रोना ही एकमात्र उनके कष्टों की अभिव्यक्ति का साधन है। माता–पिता अनुमान लगाते रहते हैं। भूख– प्यास आदि शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहते हैं। इन्हीं जरूरतों की पूर्ति से संतुष्ट हो जाते हैं बच्चे, मुस्कुराने लगते हैं।

तो साथियों! यह है हमारे आनंदमय जीवन का आरंभ ! तो क्या शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति ही है आनंद?

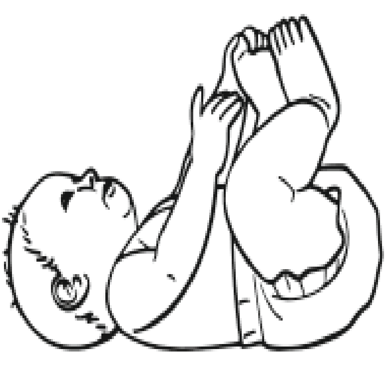

## 5. क्या शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति है आनंद?

शारीरिक आवश्यकतायें – भूख – प्यास आदि की वेदना में दुःख और पूर्ति पर प्रसन्नता का तो हमें अनादि से अभ्यास है। पेड़–पौधे , पशु–पक्षी आदि सभी प्राणी यह महसूस करते हैं, और वही संस्कार पैदा हुए बच्चों में साल– दो साल तक रहते हैं। ज्यों– ज्यों वह बड़ा होता जाता है; त्यों –त्यों खुश रहने की परिभाषाएं बदलने लगती हैं। कभी वह टॉफी, चॉकलेट में खुश हो जाता है ; तो कभी मनपसंद खिलौने की प्राप्ति पर । इस खुशी की खास बात यह है कि अब वह शरीर की जरूरतों के अतिरिक्त मन की चाहत की पूर्ति में भी खुशी ढूँढ़ने लगा है ।

इस प्रकार जब हमने शिशुओं (किड्स) पर निगाह डाली, तो हमें लगा कि शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति में है आनंद; किंतु जब बड़ों पर नजरें घुमाई, तो पता चला कि मन की संतुष्टि में भी है आनंद!

अब प्रश्न उठता है कि क्या मन की संतुष्टि में आनंद है ?

## 6. क्या मन की संतुष्टि है आनंद?

हा! हा! हा! हा! यह भी कोई विचार का विषय है क्या? अरे भाई! मन की संतुष्टि अर्थात् इच्छाओं, चाहतों, कामनाओं की पूर्ति। बच्चा हो या युवा हो या वृद्ध, सभी खुश होते हैं चाहतों की पूर्ति पर। हाँ ! यह सत्य है कि मन की संतुष्टि होने पर हमें कुछ पल मिल जाते हैं खुशी के; किंतु वे पल स्थाई नहीं, हमेशा रहते नहीं; क्योंकि हमारी चाहतों का अंत नहीं। चाहतों के भंडार हैं हम। हमारी सबकी, सभी उम्र के जनों की सारी चाहतें तो पूरी हो सकती नहीं। अतः हमें तृप्ति नहीं मिलती, संतुष्टि नहीं मिलती और हम दुःखी बने रहते हैं। इसलिए यदि मन की संतुष्टि में आनंद मानेगें तो हम सभी पूर्ण संतुष्ट हो ही नहीं सकेंगे। तो क्या मीठी वाणी में, मधुर वचनों में है आनंद?

## 7. क्या मधुर वचन है आनंद?

मीठी वाणी ! वाह !! क्या कहने मीठी वाणी के? बच्चे से बूढ़े तक– सभी दास हैं इसके। जब बच्चे भी प्यार की और डांट की भाषा पहचानते हैं, तो फिर बड़ों का तो कहना ही क्या है? हर वर्ग को अच्छी लगती है वचनों की मिठास – इसमें दो मत नहीं; पर यदि हम मात्र वाणी में ही आनंद मान लेंगे, तो फिर जो बोल नहीं सकते अथवा मौन रहते हैं, वे तो इस आंनद से वंचित ही रह जायेंगे। हाँ, यह बात अवश्य है कि अपनी दैनिक आवश्यकताओं कि पूर्ति में सभी को ख़ुशी मिलती है? तो क्या दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में है आनंद?

# 8. क्या दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति है आनंद?

आज आप मुझसे सवाल करेंगे, तो मेरा जवाब 'ना' में ही होगा। पर 'हाँ', एक समय था जब मैं दैनिक अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी तरसता था और उनकी पूर्ति होने पर खुश हो जाया करता था। आज मेरे पास सब कुछ है, धन-दौलत, संपत्ति, परिवार; पर आनंद न जाने कहाँ खो गया है? जो मिला है उसे बनाए रखने के टेंशन में, न संपत्ति का उपयोग कर पाता हूँ, न परिवार को समय दे पाता हूँ। झल्लाहट, चिड़चिड़ाहट मेरे स्वभाव के अनिवार्य अंग बन गए हैं। हाँ ! टॉप पोजीशन पर पहुंचने का सुकून अवश्य है मुझे; साथ ही है, टॉप पर बने रहने का टेंशन भी!

क्या खुशी के साथ दुःख अनिवार्य है? आज तो यही है मेरा अंतर्द्वंद्व।

## 9. क्या खुशी के साथ अनिवार्य है दु:ख?

आज जब मैंने अपने जीवन पर दृष्टि डाली, तो मुझे आभास हुआ कि जब –जब भी मुझे कोई खुशी मिली है; वह अकेली नहीं आई। अपने साथ दु:ख अवश्य लाई। जैसे– पेट भर मनपसंद खाने की खुशी मिली तो अनेक बीमारियों का दु:ख भी हुआ । आराम करने का सुख मिला, तो वजन बढ़ने का दु:ख भी हुआ । दामाद अच्छा मिलने की खुशी हुई, तो बेटी की विदाई का दु:ख भी हुआ। क्या–क्या गिनाऊँ , आप सभी तो भुक्तभोगी हैं। ऐसे 10– 20 उदाहरण आपके पास भी होंगे ही। अब प्रश्न उठता है, क्या मृग मरीचिका है आनंद?

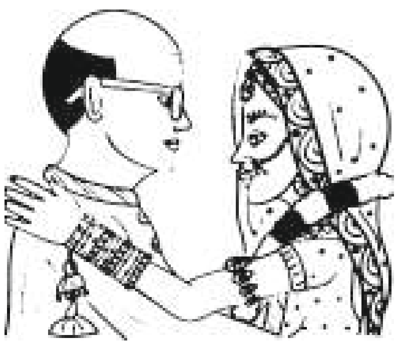

## 10. क्या मृग मरीचिका है आनंद?

आज आपके प्रश्न ने मुझे सोचने को मजबूर कर दिया है। मैं आज तक कभी शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति में, तो कभी मीठे वचनों में, तो कभी मन की जरूरतों की पूर्ति पर ख़ुशी खोजता रहा हूँ। मन, वचन, काय की इन जरूरतों से ऊपर उठा भी हूँ तो कभी बाह्य वस्तुओं में, तो कभी बाह्य प्रवृत्तियों में, क्रियाओं में आनंद ढूंढ़ता रहा हूँ। पर आज समझ आ रहा है कि यदि वस्तुओं कि प्राप्ति और अनुकूल बाह्य प्रवृत्ति में आनंद होता तो मुझे आज आनंद मिलना चाहिए? पर ऐसा तो नहीं हो रहा है। आज भी अनेक प्रश्न उठ रहे हैं मेरे मन में। आज तक जिस ख़ुशी से हम परिचित हैं; क्या वही है आनंद अथवा अभी तक हम आनंद के भ्रम में जी रहे थे?

## 11. क्या अभी तक हम आनंद के भ्रम में जी रहे थे?

मुझे जीवन में कभी खुशी मिली ही न हो, ऐसी बात नहीं है। पर आनंद के कुछ पलों को तरस रहा हूँ मैं! जिन चीजों की उपलब्धि पर कल तक खुशी मिलती थी, आज वही दु:खकर लगने लगी हैं। जिनका साथ कल तक अच्छा लगता था, आज उनसे दूर जाने का मन करने लगा है। अधिक क्या कहूँ? सारे अनुकूल संयोग आज प्रतिकूल लगने लगे हैं। आज महसूस हो रहा है कि मैं अब तक भ्रम में जी रहा था। तो क्या जिस ख़ुशी में हम आनंद मान रहे थे, वह आनंद का आभास मात्र था ? आज मुझे मेरी गलती समझ आ गई है। मेरी यह भूल क्या थी?

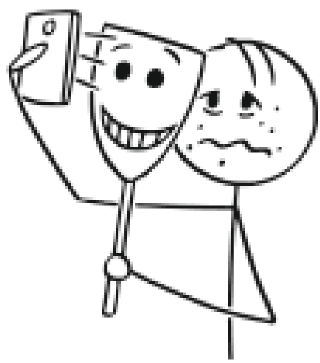

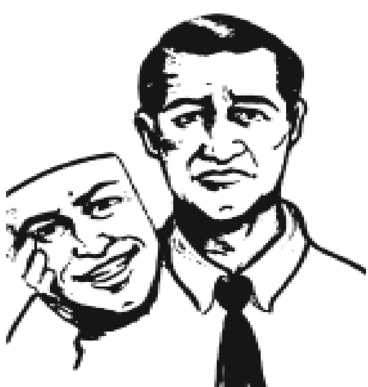

## 12. क्या है मेरी भूल?

मेरी एक नहीं, अनेकों भूलें थीं। सर्वप्रथम मैंने अपनी ख़ुशी 'साथ' में ढूँढ़नी चाही। बचपन से माँ –बाप में, फिर भाई –बहन में। ज्यों –ज्यों बड़े होते गए साथ का दायरा बढ़ता गया और ख़ुशी के लिए अधिक पराधीन हो गए। कभी दोस्तों के, तो कभी पत्नी–बच्चों के साथ में।

पत्नी बच्चों के साथ के छोटे–छोटे पलों के लिए तो अपना तन, मन, धन, सभी समर्पित कर दिया। मेरी यह 'साथ' की भावना ही पहली भूल थी यह आज समझ आया। तो फिर कहाँ है ख़ुशी? कहाँ है आनंद?

## 13. कहाँ है आनंद?

आज मुझे समझ आ रहा है; पर के साथ में, संयोगों में खुशी मिल सकती है; आनंद नहीं।

वस्तुतः पर में आनंद नहीं, वस्तु में आनंद नहीं, तो मिलेगा कहाँ से? आनंद तो बिल्कुल व्यक्तिगत वस्तु है, जो कि मुझमें ही है। नहीं! नहीं!! मुझमें आनंद नहीं; मैं स्वयं आनंद स्वरूप हूँ, आनंद का घन पिंड हूँ। अब प्रश्न उठता है कि यदि मैं आनंद का पिंड हूँ, अभी तक मुझे मिला क्यों नहीं आनंद? क्या स्वरूप है आनंद का? क्या अंतर है दोनों आनंद में? क्या दुःखरहित आनंद प्राप्त किया जा सकता है? यदि हाँ तो कैसे? कैसे?

## 14. आनंद! अनिन्द्रिय आनंद ! अनंत आनंद!!

पहली नजर में देखें तो आनंद, अनिन्द्रिय आनंद, और अनंत आनंद यह सभी पर्यायवाची से ही लगते हैं; पर यदि सूक्ष्मता से विचार करें तो इनमें भेद है, काफी गहरा भेद है। न केवल क्वांटिटी (Quantity) भेद है, अपितु क्वालिटी (Quality) भेद भी है।

उक्त शीर्षक में क्वांटिटी (Quantity) भेद के साथ-साथ क्वालिटी (Quality) भेद की ओर भी इशारा किया गया है।

तो आईये दृष्टिपात करते है, आनंद की क्वालिटी (Quality) पर।

## 15. अंतर आनंद की क्वालिटी का

पहला आनंद सांसारिक आनंद के लिए प्रयुक्त किया गया है। जो इंद्रियों से प्राप्त होने के कारण इंद्रिय आनंद भी कहलाता है। अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव की ही पाँचों इन्द्रियों के विषय भोगों में सुख बुद्धि होती है तथा ज्ञानी जीवों की पंचेन्द्रियों के विषय भोगों में सुख बुद्धि नहीं होती।

दूसरा अनिन्द्रिय आनंद और तीसरा अनंत आनंद ये दोनों ही पारमार्थिक आनंद हैं। दोनों ही इंद्रियों की सहायता से न होने के कारण अतीन्द्रिय कहलाते हैं। दूसरा आनंद मनजनित होने के कारण अनिन्द्रिय भी कहलाता है; पर केवलज्ञानियों का आनन्द अतीन्द्रिय ही कहलायेगा, अनिन्द्रिय नहीं; क्योंकि उनके मन नहीं होता जिस आनंद का कभी अंत नहीं होता – ऐसा अतीन्द्रिय आनंद अनन्त आनंद कहलाता है।

इसप्रकार सांसारिक इन्द्रिय आनंद और पारमार्थिक अतीन्द्रिय आनंद –दोनों की क्वालिटी में जमीन आसमान का अंतर है। अब हम आनंद की क्वांटिटी के अंतर को जानेंगे।

## 16. अंतर आनंद की क्वांटिटी का

दूसरा अनिन्द्रिय आनंद ज्ञानी सम्यक् दृष्टि के आनंद के लिए और तीसरा अनंत– आनंद केवलज्ञानी के आनंद के लिए प्रयुक्त किया गया है।

सम्यक् दर्शन का आनंद वास्तविक आनंद का आरंभ है और केवलज्ञान उसी आनंद की परिपूर्णता की स्थिति है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि पहला इन्द्रिय आनंद और दूसरा, तीसरा अतीन्द्रिय आनंद में क्वालिटी भेद है तथा दूसरे सम्यक् दृष्टि के अनिन्द्रिय आनंद में और केवलज्ञानी के अनंत अतीन्द्रिय आनंद में क्वालिटी (Quality) तो समान है, पर क्वांटिटी (Quantity) असमान है।

तो आइए अब नज़र डालते हैं सांसारिक और पारमार्थिक आनंदों के स्वरूप पर!

## 17. अंतर सांसारिक आनंद और पारमार्थिक आनंद में

**सांसारिक आनंद –** पहला सांसारिक आनंद पंचेंद्रियों के विषय भोगों को भोगने से उत्पन्न आनंद है। यह क्षणिक, नश्वर, दु:ख सहित और दु:ख का कारण भी होता है। अधिक क्या कहें ? यह तो दु:ख स्वरूप ही है और उसका फल भी दु:खदायी होता है। यह सभी संसारियों के अनुभूतिगम्य है। जिन संसारियों ने अनादि से अभी तक इसके अलावा अन्य आनंद का स्वाद लिया ही नहीं। वे इससे भिन्न अन्य आनंद को जानते ही नहीं, पहचानते ही नहीं; समझते ही नहीं; अतः वे इसी की प्राप्ति में निरंतर लगे रहते हैं । वे पंचेंद्रियों के विषयों की पूर्ति होने पर आनंदित होते हुए उसी में तृप्त रहते हैं।

धर्मगुरु, शास्त्र हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित भी करते हैं, पर जब तक हमें उन सांसारिक सुखों में दु:ख महसूस नहीं होता, तब तक हम उनकी बात पर ध्यान नहीं दे पाते। जब तक हमें विषय भोगों में आनंद मिलता रहता है, तृप्ति मिलती रहती है; तब तक हम पारमार्थिक आनंद की ओर कदम भी नहीं बढ़ाते हैं।

**पारमार्थिक आनंद –** दूसरा अनिन्द्रिय आनंद और तीसरा अनंत आनंद दोनों ही पारमार्थिक आनंद की श्रेणी में आते हैं। यह आनंद ज्ञान से उत्पन्न आनंद है; अपने ज्ञान स्वरूप में अपनेपन से उत्पन्न आनंद है।

यह सुख सहित, सुख का कारण और सुख स्वरूप और उसका फल भी सुखदायी है। यह सभी सम्यग्दृष्टियों के अनुभूतिगम्य है। जो संसारी जीव एक बार इस आनंद का पान कर लेते हैं, वे अपने संसार को सीमित कर लेते हैं और जो लगातार अंतर्मुहूर्त तक इस आनंद का पान करते रहते हैं, वे संसार से मुक्त हो जाते हैं।

उक्त दोनों प्रकार के आनंद को निम्न प्रकार समझ सकते हैं –

1. इंद्रियों से प्राप्त इंद्रिय आनंद ही सांसारिक आनंद कहलाता है। आत्मा में अपनेपन का अतीन्द्रिय आनंद ही पारमार्थिक आनंद कहलाता है।
2. मिथ्यादृष्टि का आनंद सांसारिक आनंद है। सम्यग्दृष्टि का आनंद पारमार्थिक आनंद है।
3. दुःख मिश्रित खुशी सांसारिक आनंद है। दु,:ख रहित खुशी पारमार्थिक आनंद है।
4. इंद्रिय आनंद दुःखरूप है। अतीन्द्रिय आनंद सुखरूप है।
5. इंद्रिय आनंद का फल दुःखदायी है। अतीन्द्रिय आनंद का फल सुखदायी है।
6. अनिन्द्रिय आनंद आनंद का प्रारंभ है।

अनंत आनंद, आनंद कि पूर्णता है और इंद्रिय आनंद, आनंद का आभास मात्र है।

जब तक संसार में सुख का आभास होता रहेगा, तब तक सही आनंद की खोज ही आरंभ नहीं होगी। जब दुःखों का एहसास होगा तब आनंद की खोज आरंभ होती है।

## 18. आनंद की खोज

न केवल मनुष्य अपितु संसार के समस्त प्राणी प्रतिसमय आनंद की खोज करते रहते हैं। जब जहाँ उन्हें दु:खों से निवृत्ति होती है, तब वहाँ वे कुछ शांति महसूस करते हैं। उस कम दुःख को वे सुख समझ बैठते हैं; जैसे भूख लगी, तो भोजन मिलने पर किंचित् तृप्ति मिली; खुजली हुई, खुजाने पर कुछ शांति मिली; प्यास लगी, पानी पीने पर संतुष्टि हुई– ऐसे ही हमारे जीवन में छोटे–छोटे पल होते हैं, जिनमें हमें कुछ देर सुकून भी महसूस होता है। उन छोटे–छोटे पलों में हम आनंद अनुभव कर अपने को सुखी समझते हैं। जबकि यह सभी पलभर की संतुष्टि है। इसप्रकार हम जीवनभर आनंद की खोज करते रहते हैं और पलों की तृप्ति में संतुष्ट हो जाते हैं; क्योंकि आनंद अनेक रूपों में हमारे सामने आता है। आनंद के नकली मौखुटे में उलझकर हम असली आनंद की ओर कदम ही नहीं बढ़ा पाते हैं ।

साधन की दृष्टि से यदि विचार करें तो जीव तीन प्रकार से आनंद की अनुभूति करता है–

(1) इंद्रियों के द्वारा होने वाला इंद्रिय ज्ञान और इंद्रिय आनंद।

(2) मन के द्वारा होने वाला अनिंद्रिय मनजनित ज्ञान और अनिंद्रिय आनंद।

(3) सीधा आत्मा के द्वारा होने वाला अतीन्द्रिय ज्ञान और अतीन्द्रिय आनंद।

## 19. इंद्रिय आनंद

इंद्रियों से प्राप्त होने वाली खुशी को ही यहाँ इंद्रिय आनंद कहा जा रहा है।

संसार में, लोक में इसे ही आनंद माना जाता है, अतः इसे ही 'सांसारिक आनंद' या 'लौकिक आनंद' भी कहते हैं। सभी संसारी जीवों के पास इन्द्रियाँ होती हैं। वे सभी जीव इंद्रियों द्वारा ही जानते हैं, सुख-दुःख का वेदन करते हैं। इतना विशेष कि पेड़-पौधों के पास एकमात्र स्पर्शन इंद्रिय ही होती है, अतः वे स्पर्श द्वारा ही सुख-दुःख का वेदन करते हैं।

इसीप्रकार इल्ली, चींटी, मच्छर, पशु-पक्षी आदि को क्रमशः दो, तीन,चार और पाँच इन्द्रियाँ होती हैं । जिनके द्वारा सभी जीव क्रमशः स्पर्श, रस, गंध, वर्ण और शब्द को जानते हैं।

चूँकि हम मनुष्यों को पाँच इन्द्रियाँ प्राप्त हैं, अतः हम सभी पाँचों इंद्रियों के माध्यम से आनंद प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

यहाँ इतना विशेष जानना चाहिए कि सभी मनुष्यों और पाँच इंद्रियों वाले कुछ थलचर, जलचर, नभचर-हाथी, शेर, मछली, तोता आदि पशु-पक्षियों के मन भी होता है। मन होने पर मन सहित सभी जीवों को एक विशेष शक्ति प्राप्त हो जाती है, जिसकी विशेष चर्चा 'अनिन्द्रिय आनंद' के प्रकरण में की जाएगी।

पाँचों इंद्रियों की वृत्ति बहिर्मुखी होती है अर्थात् उनके द्वारा बाह्य वस्तुओं (मूर्त पदार्थों) का ही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है; अतः वे बाह्य साधनों में ही सुख ढूँढ़ती हैं।

आप सभी स्वयं अपने जीवन पर दृष्टिपात करें तो पाएँगे कि पाँचों इंद्रियों के द्वारा होने वाले कुछ ज्ञानों में हम अनुकूलता फीलिंग् करते हैं और कुछ फीलिंग्स में प्रतिकूलता। जिनमें अनुकूलता महसूस होती है, उनमें हमें सुख का एहसास होता है और जिनमें प्रतिकूलता महसूस होती है, उनमें हमें दुःख होता है। जैसे:- किसी को एयरकंडीशन की ठंडक सुखप्रद लगती है और किसी को दु:खप्रद। इसीप्रकार किसी को तीखा खाना अच्छा लगता है तो किसी को मीठा। इसप्रकार हम सभी पाँचों इंद्रियों के सुख-दु:ख को तो दिन-रात भोगते रहते हैं। अतः अनादि से चिर-परिचित उस खुशी के विशेष कथन की यहाँ आवश्यकता नहीं; किंतु विचारणीय विषय यह है कि खुशी के उन छोटे-छोटे पलों की प्राप्ति के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करना उचित है क्या? यदि, नहीं! तो वह कौन सा आनंद है- जिसे हमें अपना लक्ष्य बनाना चाहिए? क्या हम उस आनंद को पा सकते हैं ?

तो आइए! अब हम उसी आनंद की चर्चा करते हैं-

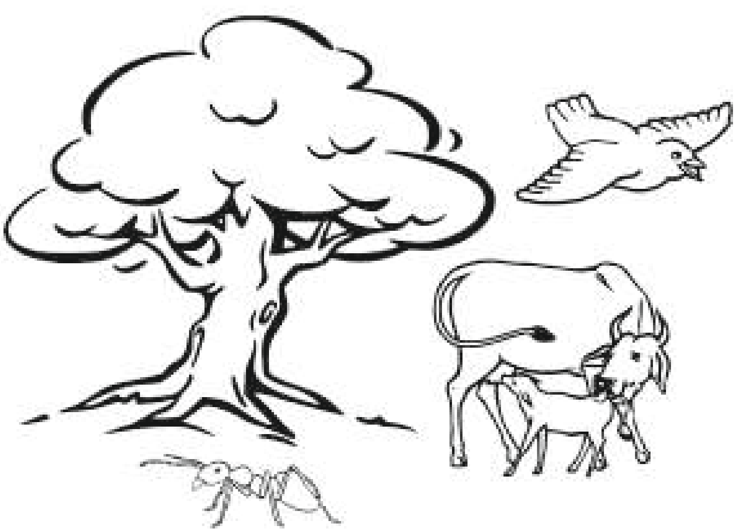

## 20. अनिन्द्रिय आनंद

मन से प्राप्त होने वाले आनंद को ही यहाँ अनिन्द्रिय आनंद कहा जा रहा है। इंद्रियों की सहायता से रहित होने के कारण इसे अनिन्द्रिय कहते हैं और मन से होने के कारण इसे ही मनजनित भी कहते हैं।

मन की गति दिखाई देने वाले, न दिखाई देने वाले – सभी विषयों और वस्तुओं की तरफ होती है। मन का काम सोचना– विचारना, अनेकों विकल्प खड़े करना और अपने–पराए की पहचान करना है। अपने–पराए की पहचान करना– यह वह विशेष शक्ति है – जिसके द्वारा जीव अनिन्द्रिय आनंद की प्राप्ति की ओर कदम बढ़ाता है।

## 21. स्व–पर भेदविज्ञान

स्व और पर के बीच में भेद पूर्वक होने वाला विशेष ज्ञान ही स्व–पर भेदविज्ञान कहलाता है।

स्व (आत्मा) का और पर (शरीरादि) का भिन्नपना जैसे भासित हो, वैसे विचार करते रहने से भेदविज्ञान होता है । चूँकि इस चिंतन में स्व और पर मुख्य हैं; अतः इसे 'स्व– पर भेदविज्ञान' कहते हैं। विशेष बात ध्यान देने की यह है कि यहाँ अपने बच्चों और पराए बच्चों की पहचान होना स्व–पर भेदविज्ञान नहीं; क्योंकि ऐसा ज्ञान तो पशु–पक्षियों को भी हो जाता है। कौआ और कोयल भी अपने–अपने बच्चों को पहचानते ही हैं; किंतु यहाँ आत्मा में अपनापन को 'स्व' और शरीरादि में परायापन को 'पर' मानना ही स्व–पर भेदविज्ञान की श्रेणी में रखा गया है।

यह स्व–पर भेदविज्ञान ही हमें अनिन्द्रिय आनंद व अनन्त आनंद की ओर ले जाता है।

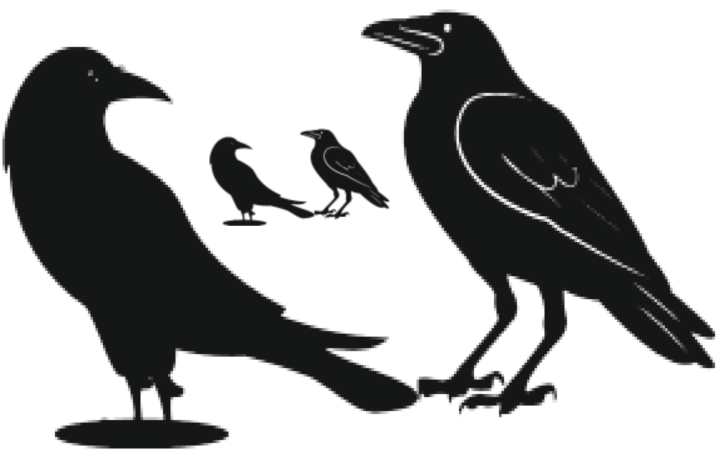

## 22. भेदविज्ञान की प्रक्रिया

शास्त्रों को पढ़कर, गुरु के वचनों को सुनकर अपने ज्ञान में स्व और पर के बीच विभाजन रेखा को खींचने से ही भेदविज्ञान की प्रक्रिया आरंभ होती है।

जब हम पर पदार्थों और पर भावों से भिन्न निज भगवान आत्मा की अनुभूति कर लेते हैं, प्रत्यक्ष वेदन कर लेते हैं, तब असली भेदविज्ञान का आरंभ होता है। यह आत्मा की अनुभूति ही वास्तविक भेदविज्ञान है, तथापि इसके लिए किये गए पुरुषार्थ को भी भेदविज्ञान कहा जाता है।

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए सर्व प्रथम हमें स्व-पर के बीच विभाजन रेखा खींचना होगी।

फिर पर पदार्थों, पर भावों से भिन्न निज आत्मा की अनुभूति होगी। जब ज्ञान पर से हटकर स्व में लगता है अर्थात् स्व आत्मा ज्ञान का ज्ञेय बनता है; तब ज्ञान, ज्ञान में प्रतिष्ठित हो आनंद का अनुभव करता है। यही ज्ञान की अनुभूति आत्मानुभूति है, सम्यग्दर्शन है। यह भेदविज्ञान चार स्तरों पर किया जाता है ।

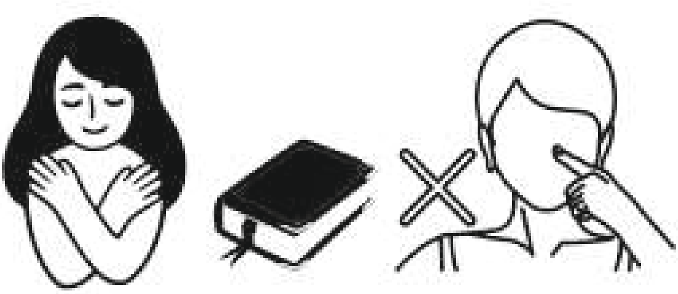

## 23. भेदविज्ञान के स्तर

1. सर्वप्रथम प्रकट बाह्य पदार्थों से भेदविज्ञान करना है। जिसमें माता-पिता, भाई-बहन, स्त्री-पुत्र, मकान आदि से भेदविज्ञान किया जाता है। 'ये मैं नहीं, ये मेरे नहीं, मैं इनका कर्त्ता-भोक्ता नहीं' - ऐसा जाना जाता है, माना जाता है।

2. दूसरे स्तर पर देह से भेदविज्ञान किया जाता है। आत्मा देह में रहता है, पर देह नहीं है - ऐसा जाना-माना जाता है। इसमें देह में रहते हुए आत्मा को देह से भिन्न देखना है।

3. तीसरे स्तर पर विकारी भावों (मोह, राग, द्वेष) से भेदविज्ञान किया जाता है। ये भाव यद्यपि आत्मा में ही उत्पन्न होते है, आत्मा से इनका क्षणिक तादात्म्य संबंध भी है, फिर भी वे पर के लक्ष्य से उत्पन्न होते है, दु:खदायी हैं; अतः पर ही हैं।

4. चौथे स्तर पर निर्मल पर्याय से भेदविज्ञान किया जाता है; क्योंकि पर्याय में रहते हुए पर्याय से पार देखना है। पर्याय में एकत्व बुद्धि नहीं करनी है; क्योंकि पर्याय क्षणिक है।

इसप्रकार चार प्रकार से भेदविज्ञान करते हुए जब आत्मा अपने में ही आत्मबुद्धि करता है कि यह आत्मा मैं ही हूँ, तब अधिक रुचि के जोर में उपयोग पर से हटकर त्रिकाली ध्रुव, अखण्ड, अभेद आत्मा पर चला जाता है। उपयोग के तेजी से अन्तर्मुख होने पर आत्मानुभव हो जाता है। रत्नत्रय का आरंभ होता है। इस उक्त भेदविज्ञान की भावना को नचाने से रत्नत्रय की पूर्णता होती है।

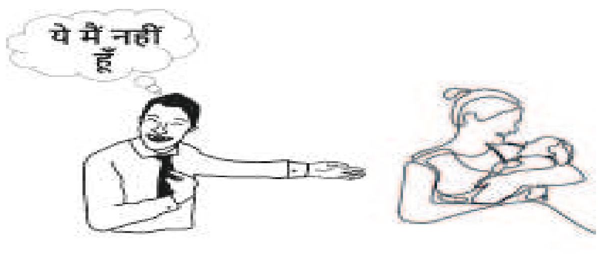

## 24. रत्नत्रय की पूर्णता

रत्नत्रय की पूर्णता के लिए आत्मानुभूति प्रकट होने के बाद उपयोग की अस्थिरता और शेष रागांश के विनाश के लिए भी भेदविज्ञान की भावना के बल से ही उपयोग बाहर से हटकर बारम्बार आत्मा में जाता है, आत्मा में गहराई से जमता, रमता है और एक दिन ऐसा आता है कि उपयोग सदा के लिए उपयोग में स्थिर हो जाता है, आत्मा सब विकारों से मुक्त हो जाता है। इसप्रकार जबतक आत्मा मुक्त नहीं हो जाता, तबतक भेदविज्ञान की उपयोगिता है। यह स्व–पर भेदविज्ञान ही हमें अनन्त आनंद की ओर ले जाता है। इसे अतीन्द्रिय आनंद भी कहते हैं। जिसकी चर्चा आगे की जा रही है।

## 25. अतीन्द्रिय आनंद

सीधा आत्मा से प्राप्त होनेवाले ज्ञान को अतीन्द्रिय आनंद कहा जाता है। इन्द्रियों की सहायता से रहित होने के कारण इसे अतीन्द्रिय कहते हैं।

हमारा जो ज्ञान पाँच इन्द्रियों द्वारा स्पर्श, रस, गंध, वर्ण और शब्द को जानता है; मन द्वारा अनेक विकल्प करता है, वही ज्ञान जब मात्र अपने ज्ञान स्वरूप को ही जानता है, तब यह आनंद प्रगट होता है। जब यह आनंद प्रगट होता है,तब अन्य का जानना सहज ही नहीं होता है; क्योंकि हमें उपलब्ध हमारा वर्तमान ज्ञान एक समय में एक ज्ञेय को ही जानता है।

यद्यपि जो ज्ञान इन्द्रियों और मन के द्वारा पर को जानता है, वही ज्ञान अपना अनुभव करता है; तथापि इस ज्ञान को अतीन्द्रिय कहते हैं; क्योंकि इन्द्रियाँ तो स्पर्श, रस, गंध, वर्ण और शब्द को ही जानती है। वह यहाँ अनुभव में नहीं है और मन विकल्प करता है, वह भी यहाँ नहीं है।

विकल्प रहित होने के कारण इस अनुभव और आनंद को निर्विकल्प अनुभव और निर्विकल्प आनंद भी कहते हैं।

# लेखिका की अन्य कृतियाँ

01. जैन नर्सरी (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
02. जैन के.जी. भाग-1 (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
03. जैन के.जी. भाग-2 (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
04. जैन के.जी. भाग-3 (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
50-06. जैन कलर बुक भाग 1-2 (ड्राइंग बुक)
07-10. जैन जी.के. भाग-1 से 4 तक (हिन्दी, अंग्रेजी)
11-16. जैन जी.के. भाग-5 से 10 तक (हिन्दी)
17-18. चलो पाठशाला, चलो सिनेमा भाग 1-2
19. सीखें हम गाते-गाते
20. शब्दों की रेल
21-23. आगम प्रवेश भाग-1,2,3
24. मुझमें भी एक दशानन रहता है
25. संस्कार का चमत्कार (दादी की कहानी)
26. बढ़ते कदम
17. राम कहानी
28. विचार के पत्र : विकार के नाम
29. तलाश : सुख की
30. मुक्ति की युक्ति
31. एक संभावना यह भी
32. सत्ता का सुख
33. बालबोध प्रशिक्षण गाईड
34. प्रवेशिका प्रशिक्षण गाईड
35. अर्चना गाईड
36. नयचक्र गाईड (अध्यात्म के नय)
37. आगम के नय
38. अनुपम खोज (सप्तभंगी टीका)
39. परीक्षामुख प्रवेशिका (टीका)
40. उपादान निमित्त दोहा (टीका)
41. प्रमाणज्ञान
42. आत्मानुभूति कैसे?
43. जैनदर्शनसार
44. आचार्य अमृतचन्द्र और उनका पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (लघु शोध)
45. आचार्य कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार : एक समालोचनात्मक अध्ययन (शोध प्रबंध)
46. मिनी समयसार
47. समयसार प्रश्नोत्तरमाला भाग-1
48-50. परमागम प्रवेशिका भाग-1, 2, 3/4
51. प्रमाणज्ञान : सम्यग्ज्ञान
52. मीडियम समयसार : भाग-1
53. आनंद एक : रूप अनेक

## जैन गेम्स

1. नो टाइम पास
2. हमारी लाईफ
3. लगे रहो जीवराज
4. चौबीसी (Poster)
5. Maze to Moksh

## E-books

01. मिनी समयसार भाग -1
02. मिनी समयसार भाग -2
03. परमागम प्रवेशिका भाग - 1
04. परमागम प्रवेशिका भाग - 2
05. परमागम प्रवेशिका भाग - 3
06. परमागम प्रवेशिका भाग - 4
07. मीडियम समयसार भाग - 1
08. प्रमाणज्ञान : सम्यग्ज्ञान
09. समयसार प्रश्नोत्तरमाला : भाग-1
10. आनंद एक : रूप अनेक

जैन बाल साहित्य के उत्कृष्ट लेखन हेतु अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद् द्वारा **विद्वत्रत्न की उपाधि** से सम्मानित विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया को 8 मार्च 2008 को महिला दिवस के अवसर पर मुम्बई की महापौर के शुभ कर कमलों से भी सम्मानित किया गया है। आपका जन्म अशोकनगर (म.प्र.) में 30 जनवरी 1958 को हुआ।

आपके द्वारा एम.ए. में लघुशोध निबंध के रूप में लिखी गई पुस्तक मात्र 19 वर्ष की अवस्था (27-11-1977) में प्रकाशित हो गई।

आधुनिक बाल जैन साहित्य की प्रणेता आपने **जैन सिद्धान्तों को सर्वप्रथम पहेलियों के रूप में** प्रस्तुत कर जैन बाल साहित्य को नई दिशा प्रदान की है। खेल-खेल में **गेम्स के माध्यम** से बच्चों में जैन सिद्धान्तों का बीजारोपण करने का प्रयास सर्वप्रथम आपके द्वारा किया गया।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकों में पहेलियों, कविताओं और प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गए पाठों के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं भेदज्ञान कराया गया है।

आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। गद्य-शैली, पद्य-शैली, चम्पू (गद्य-पद्य मिश्रित) शैली, पत्रशैली, डायरीशैली, छोटे-छोटे मंचन योग्य नाटक, बड़े-बड़े नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं के दर्शन आपकी कृतियों में होते हैं।

आपके निर्देशन में सर्वप्रथम युवाओं के लिए देश भर में **art of happy living** नाम से सेमीनार कम वर्कशॉप के अनेकों आयोजन भी किए जाते हैं।

आपके निर्देशन में 'परमागम ऑनर्स' शास्त्री कोर्स का आरम्भ जुलाई 2016 से हो गया है। इस कोर्स में जैन-अध्यात्म का व्यवस्थित, नियमित अध्ययन और जैन सिद्धान्तों को जीवन में उतारने का तरीका गुरुओं के मार्गदर्शन में सिखाया जाता है। इसमें नई परीक्षा प्रणाली अपनाते हुए Open Book Exam होता है। जिनागम के अध्ययन-अध्यापन के लिए आधुनिक इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए Internet या Teleconfrence call के द्वारा कक्षायें ली जाती हैं। इसका संचालन श्रीमती स्वानुभूति द्वारा किया जाता है।

वर्तमान में आप पी.एच.डी. की गाईड भी हैं। किसी भी विषय से पी.जी. किए हुए व्यक्ति यदि जैनदर्शन में पी.एच.डी. करना चाहते हैं तो आपके निर्देशन में कर सकते हैं।

सम्प्रति आप अपने परिवार के साथ मुम्बई में रहती हैं। जहाँ आपके पति श्री अविनाशकुमार टड़ैया का हीरे-जवाहरात एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है।

आपके द्वारा अभी तक छोटी-बड़ी 53 पुस्तकें लिखी गईं हैं।